REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 10 | JULY - 2023

वडोदरा राज्य के ग्रंथालय

दवे निलेषा डी.
पीएच.डी. स्कोलर, श्री गोविंद गुरु युनिवर्सिटी गोधरा.

सारांश :

ग्रंथालय ज्ञान की परब है। यह परब में ज्ञान की प्यास छीपाने की सुविधा है। ग्रंथालय यानी लोकशिक्षण का एक अमोध साधन है।

ग्रंथालय यानी पुस्तको का रहठाण - Library ग्रंथालय की जगह वर्तमान समय में Library शब्द का बहुत प्रचलित है। ग्रंथालय शब्द सुनने के साथ ही अपने मन में ऐसा भाव पेदा होता है कि, 'पुस्तकों का संग्रह यानी ग्रंथालय' सभी स्कूल-माध्यमिक स्कूलो में ग्रंथालय होना आवश्यक है और उस के साथ सभी गाँव या शहर में कम से कम एक सार्वजनिक ग्रंथालय होना जरुरी है।

ग्रंथालय के लिए एक बहुत ही अच्छा वाक्य है कि "Enter to learn exit to serve ।" ग्रंथालय में अपने बहोत कुछ शीखने, जानने और समझने के लिए प्रवेश करते है। जब ग्रंथालय से बहार आते है तब साथ में सेवाभाव की भावना के साथ बाहर आते है। ''ग्रंथालय ज्ञान और जानकारी प्राप्त करने का बहोत उत्तम साधन है।'' जो इन्सान ग्रंथालय में प्रवेश नहीं करता वह ज्ञान और जानकारी से वंचित रहता है और ग्रंथालय में से लीया हुआ ज्ञान सीर्फ पुस्तक सीमित नहीं रहेता बल्कि सेवा में बदल जाता है तब ह ज्ञान सार्थक होता है। पुस्तक दिखावे से जड लगते है लेकिन उसमें छुपे हुऐ शब्द इन्सान के चैतन्य को जागृत करता है। इन्सान के जीवन में हलचल पेदा करता है और समाज में क्रांति की ज्वाला प्रज्वलित करता है।

ग्रंथालय एक ऐसा मित्र है जो कभी दगा नहीं देता। अपने मुल्क में बहोत महानुभावो ने ग्रंथालय में बेठ के अपनी मानसिकता का विकास किया है और उस के बल पर समाज की अनेक खराब रीत-रिवाजो को दूर करने का प्रयत्न किया है। ग्रंथालय के लिए दिया हुआ दान उच्च प्रकार का दान है। समाज और देश को समृध्ध बनाने के लिए ग्रंथालय देश में बहोत जरुरी है। ग्रंथालय गाँव, शहर, राजय और देश की शोभा है।

कीवर्ड : ग्रंथालय, सामाहिक, परिषद, सार्वजनिक.

❋ प्रस्तावना :

◆ वडोदरा राज्य में ग्रंथालय की शुरुआत :

ग्रंथालय उस समय के समाज के लिए जरुरी है। उस समय के निरक्षर लोग में सामाजिक सुधार के लिए भी ग्रंथालय जरुरी है और ग्रंथालय से लोगो में पढ़ने का शोख बढे और पुस्तक एवम वर्तमानपत्रो से लोगो में ज्ञान की बढोतरी हो यह उद्देश से श्रीमंत सरकार महाराजा श्री सयाजीराव गायवाड ने ई.स.१९११ में राज्य में ग्रंथालयो के लिए एक नये खाते की शुरुआत की है। यह खाता से राज्य के ग्रंथालयो ने सभी प्रकार की मदद देने के नियम दिये हुए है। ग्रंथालय के मकान के लिए एवम उस के निभाव के लिए लोगो से जितनी

रकम इकट्ठा करे उतनी ही रकम सरकार में से और उतनी ही रकम प्रांत पंचायत में से देने का ठराव किया। गायकवाड ने ग्रंथालय की प्रवृत्ति को बढाने के लिए लोकभागीदारी का मार्ग अपनाया और उसमें सरकार के साथ साथ लोगो को भी इस प्रवृत्ति को जोड दीया। इसके चलते राज्य में नये ग्रंथालयो की संख्या रोज-ब-रोज बढने लगी और पूराने ग्रंथालयो के निभाव के लिए लोगों ने उदार हाथो से दान दीया।

ग्रंथालय खाते की स्थापना हूई उसके पहले कडी प्रांत के ७ कस्बों में लोगो के द्वारा ग्रंथालय का आयोजन किया जाता था। कडी प्रांत का सबसे पहला ग्रंथालय विसनगर में ई.स.१८७७ में शुरु हुआ। उसके बाद ई.स.१८८० में कडी में ग्रंथालय की स्थापना की। जबकी पाटण में ई.स.१८९० में ग्रंथालय की स्थापना की। उसके बाद ई.स.१९०६ में सिध्धपुर में, ई.स.१९०९ में खेरालु में, ई.स.१९१० में कलोल, ई.स.१९११ में वडनगर में ग्रंथालय लोगों ने स्थापना की और यह सभी ग्रंथालयो का वहीवट भी लोगो में से नक्की किये हुए प्रतिनिधिओं के द्वारा कीया जाता था। यह ग्रंथालय के वहीवट में लोक प्रतिनिधित्व देखने को मिलता है।

उस के बाद विजापुर, महेसाणा, लाडोल, दहेगाम, चाणस्मा और आंतरसुबा के कस्बों में ग्रंथालय खाता की स्थापना के बाद लोगो की भागीदारी से ग्रंथालयों की शुरुआत की थी। उसमें विजापुर में ई.स.१९१३ में, लाडोल में ई.स.१९१३, महेसाणा में ई.स.१९१४ में ग्रंथालयों की शुरुआत की थी।

◆ वडोदरा राज्य की ग्रंथालय परिषदें :

वडोदरा राज्य में ग्रंथालय की प्रवृत्ति को आगे बढाने के लिए हाल में जो ग्रंथालय है उस में लोगों की मदद मीले और लोगो में ग्रंथालय के प्रति उत्साह जागे उसके लिए वडोदरा राज्य में अलग-अलग जगहों में ग्रंथालय परिषद का आयोजन किया था और उसके साथ लोकभागीदारी से यह काम बहुत अच्छी तरह से कीया जा सकता है और लोगों को उसकी उपयोगिता समझने के लिए परिषद के स्वागत प्रमुख के द्वारा भाषण किया हुआ था और उसके द्वारा लोगों में ग्रंथालय की प्रवृत्ति के लिए जागृति लाने का प्रयत्न किया हुआ था।

➢ पहली परिषद :

वडोदरा राज्य में ग्रंथालयों के विकास के लिए पहली परिषद दिनांक : १२-१३ अेप्रिल, १९२५ के रोज गणदेवी में हुई और उस परिषद का स्वागत प्रमुख श्री सुमंतराय हकुमतराय देसाइ थे और ग्रंथालय की उपयोगिता और उस के निभाव की बाबतो पर भाषण किया और लोगो के सहयोग से ज्यादा से ज्यादा ग्रंथालय खुले उसके प्रयास करने का उद्देश दिया।

उन्होंने किस प्रकार के ग्रंथालय होने चाहिए उसकी जानकारी दी। ग्रंथालय स्कूलो में होने चाहिए और पुस्तकों की पसंदगी और लायब्रेरीयन के कार्यो की जानकारी दी थी।

उन्होंने लायब्रेरीयन के लिए कहा कि वह अपने फर्ज के प्रति निष्ठा यह बहुत आवश्यक है। ‘वह सिर्फ पुस्तको का संग्रहस्थान रक्षक न होना चाहिए लेकिन खुद विद्वान होना चाहिए तभी तो लोगों को पूर्ण संतोष दे शकेगा।

➢ दूसरी परिषद :

रहठाण : द्वारका दिनांक : ४-५ मार्च, १९२६

स्वागत प्रमुख : श्री पुरुषोत्तम विश्राम मावजी

वडोदरा राज्य की दूसरी परिषद ग्रंथालय परिषद द्वारका में हुई थी और वह परिषद के स्वागत प्रमुखने कहा के ‘‘जो काम युनिवर्सिटी नहीं कर सकी वह ग्रंथालय कर सकती है।’’

➢ तीसरी परिषद :

दिनांक : १०, ११, १२ मार्च, १९२८ रहठाण : पेटलाद

स्वागत प्रमुख : दातार शेठ रमणलाल केशवलाल

➢ चौथी परिषद :

दिनांक : २८, २९, ३० मार्च, १९२९ रहठाण : अमरेली

स्वागत प्रमुख : श्री हरिलाल गोविंदजी परीख

यह परिषद में उन्होंने ज्यादा से ज्यादा ज्ञान की परब शुरु करने का अनुरोध किया। रु.५०० जैसी छोटी रकम से घूमता ग्रंथालय शुरु करके बरसों तक लोगों को वांचन गाँव-गाँव पहोंच शके।

➢ पाँचवी परिषद :

ता.१६, १७, १८ मार्च, १९३०

रहठाण : पाटण

स्वागत प्रमुख : श्री मणिलाल लल्लुभाइ परीख

वडोदरा राज्य की ग्रंथालय परिषद की पाँचवी परिषद कडी प्रांत के पाटण में हुई थी। यह परिषद एक ऐसी संस्था है की जीसमें कलेरा को स्वप्न से और उसमें छोटे से छोटा इन्सान से लेकर बडे से बडा लक्ष्मी पुत्रो को भी सामिल कियाा है। अज्ञान इन्सान से लेकर प्रखर विद्वानो का समावेश हुआ है।

इस के अलावा इन्होंने कहा की प्राथमिक शिक्षण का दूसरा पहलू ग्रंथालय है।

इन्होंने पाटण के अलग-अलग जगहों में ग्रंथालय प्रवृत्ति ज्यादा से ज्यादा वेगवंत बने उसके लिए प्रयास किया है।

➢ छठ्ठी परिषद :

दिनांक : ३, ४ मार्च, १९३४

रहठाण : वडोदरा

स्वागत प्रमुख : रा.ब.गोविंदभाई हाथीभाई देसाइ

गोविंदभाई हाथीभाई देसाइने यह परिषद में ग्रंथालय परिषद मंडल की स्थापना करने के हेतु बताए थे।

(१) गाँव-गाँव ग्रंथालयों की स्थापना हो।

(२) कार्यकर्ताओं, सरकार और स्थानिक संस्थाओं के बीच सहकार बढे।

(३) लोग ज्यादा से ज्यादा वांचन में रस लेनेवाले बने।

(४) ग्रंथालयों की प्रगति होने में सामान्य हरकत दूर होकर काम की सरलता हो।

(५) ग्रंथालयो के काम श्रीमंत सरकार के उद्देश के आधिन बहोत अच्छी तरह से चले ऐसी महेनत करनी है।

इसके साथ इन्होंने अपने भाषण में ग्रंथालय परिषद मंडल ने किया हुआ कार्य को भी कहा था और पूरे भारत में फरजीयात केलवणी डालने की पहल सरकार महाराजा सयाजीराव गायकवाडने की थी। स्कूल की केलवणी पूरी होने के बाद लोगों में ज्ञान की बढत हो इसके लिए मुफ्त सार्वजनिक ग्रंथालय की योजना भी उन्होंने शुरु की थी। उन्होंने ग्रंथालयों की योजना ई.स.१९१० में शुरु की। यह काम का विकास इतना सब हुआ की वडोदरा राज्य जीतना विस्तार और बस्तीवाला दुनिया के किसी भी राज्य में हुआ नहीं।

उस समय हिन्दुस्तान के नामदार वाइसरोय साहेब ई.स.१९३२ के डिसेम्बर में वडोदरा आये उस समय नामदार लेडी विलिंग्डन सेन्ट्रल लायब्रेरी की मुलाकात ली वहाँ की विझीट बुक में लीखा हुआ है कि..

"I so much enjoyed my second visit to this wonderful Library which is doing such great work in this state."

''वडोदरा संस्थान में ऐसा महान कार्य करती यह अजब ग्रंथालय संस्था की मेने मुलाकात ली थी। यह दूसरी मुलाकात से मुझे बहोत ही आनंद हुआ है।''

''वहाँ का चित्रसंग्रह मंदिर और ग्रामजनों के लिए घूमता ग्रंथालय की सुविख्यात योजनावाला मध्यवर्ती ग्रंथालय यह दो संस्थाएँ वडोदरा राज्य की सरहद बहार के आधे मुलकों में मशहूर है और यह बात जानकर में खुश हुआ हूँ की राज्य की आधे से आधे के कोने में आया हुआ गाँवको भी केलवणी तक देने के लिए यह महान योजना बहुत सुंदर प्रगति कर रही है।''

'वडोदरा नरेश श्रीमंत सयाजीराव गायकवाड जैसी प्रतिभा संपन्न व्यक्तिने हिंद की ग्रंथालय प्रवृत्ति में पिता का जो यशस्वी बिरुद दिना हुआ है वह योग्य है। उनकी आगेवानी बल्की उनकी पहल यह क्षेत्र में ज्यादा गहन कार्य करवाने और ज्यादा बडा परिणाम लेने उत्तेजित है।

उस समय पर जुलाइ १९३३ तक वडोदरा में एक सेन्ट्रल लायब्रेरी उपरांत ४५ कस्बा ग्रंथालयो, ९१८ ग्राम पंचायतो, १४ स्त्रीओ और बच्चो के लिए खास ग्रंथालयो और १३८ वांचनालयो ११२५ छोटी-बडी सार्वजनिक ग्रंथालय संस्थाएँ राज्य में थी।

❊ उत्तर गुजरात (कडी प्रांत) में भरी हुई ग्रंथालय परिषद :

➢ पहली ग्रंथालय परिषद :

दिनांक : २९, ३० अेप्रिल, १९३१ रहठाण : महेसाणा

स्वागत प्रमुख : शेठ मोहनलाल ताराचंद भोजक

कडी प्रांत की पहली ग्रंथालय परिषद महेसाणा में २९, ३० अेप्रिल, १९३१ के रोज हुई थी। यह परिषद होने का कारण महेसाणा प्रांत के ग्रंथालयो का संगठन हो और एक-दूसरे के सहकार से कार्य सुंदर तरीके से हो इसीलीए प्रांत ग्रंथालय मंडल और तालुका मंडल की स्थापना करने का विचार किया था।

ग्रामजन ज्यादा से ज्यादा ग्रंथालय का लाभ ले ऐसी व्यवस्था करनी और कडी प्रांत के ज्यादा से ज्यादा ग्रंथालयो उसके लिए अनुरोध किया था। उन्होंने कहा था की कडी प्रांत के धनवानो में दानवृत्ति देखने को मिलती है लेकिन वह दान की दिशा थोडी बदलने की जरुरत है। शास्त्रकारों ने इस दान को बडे से बडा दान माना है और ज्ञानविकास एक महत्व का अंग है। इसीलिए ज्ञान का ज्यादा विकास हो इस तरीके से ग्रंथालय खोलना निभाना और दानवीरो को अपना दान देना चाहिए ऐसा उन्होंने अनुरोध किया और लोगों की भागीदारीने ज्यादा योग्य गीना है।

➢ दूसरी ग्रंथालय परिषद :

रहठाण : उंझा

दिनांक : ७, ८ अेप्रिल, १९३३

स्वागत प्रमुख : शेठ नटवरलाल मगनलाल

यह परिषद के प्रमुखने कहा है कि ग्रंथालय ज्ञान के अमूल्य भंडार है और उसके लाभ अलग-अलग ज्ञाति और धर्म की गरीब या तवंगर सभी इन्सान को मील सकता है और उसके लिए लोगों की भागीदारी से ज्यादा से ज्यादा ग्रंथालय खुले और लोग उसका ज्यादा उपयोग करे उस पर उन्होंने भार दिया है।

➢ पाटण की ग्रंथालय परिषद :

रहठाण : पाटण दिनांक : १७, १८, १९ मार्च, १९६०

स्वागत प्रमुख : लेडी विद्यागौरी रमणभाइ नीलकंठ

यह परिषद में भी प्रमुखने ग्रंथालय प्रवृत्ति को आगे बढाने के लिए ज्यादा से ज्यादा महेनत सरकार और लोगो के द्वारा हो और लोगों की ज्ञान लेने की आशा पूरी हो उसके लिए अनुरोध किया था। उन्होंने पाटण के भंडारो को सुप्रसिद्ध माना था।

❊ १००० से ज्यादा बस्ती वाले गाँव :

१. चाणस्मा महाल :

(१) भाटसर

२. पाटण महाल :

(१) अघार (२) कमलीवाडा (३) कांसा (४) चंद्रुमाणा (५) भीलवण (६) मेसर (७) सरीयद

३. सिध्धपुर महाल :

(१) डाभी (२) डांडरोण (३) बीलीआ (४) भाखर (५) मेलोज (६) सेद्राणा

४. हारीज महल :

(१) पीपलाणा

यह सब गाँव की बस्ती १०००० से ज्यादा थी लेकिन उस समय यह सब गाँवो में ग्रंथालयो की सगवड न थी। इसीलिए यह परिषद के प्रमुख शेठ महासुखभाइ चुनीलाल शेठ यह प्रांत के उत्साही युवकों की मदद लेकर लोगों को ग्रंथालय शुरु करने के लिए आहवान किया है। उस समय गायकवाड के प्रयासो से कडी प्रांत (उत्तर प्रांत) जो अभी का उत्तर गुजरात के लोगो द्वारा, लोगो से ग्रंथालय शुरु किया था। ऐसे उत्तर गुजरात के लोक प्रतिनिधित्व करते ग्रंथालयों की स्थापना और उसकी स्थापना में उस समय के लोगों ने दिया योगदान और उनके कुशल वहीवट की जानकारी लेंगे।

❊ समापन :

सयाजीराव (तृतिय) के वक्त में गुजरात और उत्तर गुजरात में शिक्षण के स्तर को बढाने के प्रयास हुए थे। इस समय में सयाजीराव ने प्राथमिक शिक्षण मुफ्त और फरजीयात बनाया था। इस के परिणाम स्वरुप गावों में प्राथमिक स्कूले शुरु की थी। उस समय लोक प्रतिनिधिओ के द्वारा मंडलो की स्थापना करके शैक्षणिक संस्थाएँ शुरु की थी और उसका वहीवट लोक प्रतिनिधि संचालन करते और प्रजा उपयोगी कार्य करती थी। उत्तर गुजरात में ऐसी बहोत शैक्षणिक और आरोग्य विषयक संस्थाएँ शुरु हुई थी। जिसमें से कितनी संस्थाएँ तो आज भी देखने को मिलती है।

ग्रंथालय ज्ञान की परब है। यह परब में ज्ञान की तरस छिपाने की व्यवस्था होती है। ग्रंथालय यानि लोकशिक्षण का एक अमोध साधन है।

उस समय वडोदरा राज्य में गायकवाड शासको ने वडोदरा राज्य की ग्रंथालय प्रवृत्ति की शुरुआत की थी। गायकवाड समय में ग्रंथालय परिषदें भी होती थी। उत्तर गुजरात में स्थपाई गई ग्रंथालयों का वहीवट लोक प्रतिनिधिओं द्वारा होता था। जैसे की श्रीमंत फतेहसिंहराव सार्वजनिक ग्रंथालय, मूलीबाई सार्वजनिक महिला ग्रंथालय, आर्यसमाज वांचनालय, शेठ भोगीलाल चकुलाल ग्रंथालय इत्यादी ग्रंथालय उत्तर गुजरात में थे और उनका वहीवट लोक प्रतिनिधिओं द्वारा होता था

❊ संदर्भ पुस्तक :

१. संचयकर्ता वडोदरा राज्य ग्रंथालय परिषद मंडल, ''ग्रंथालय प्रवृत्ति, भाषणो और लेखो'', प्रकाशक : ग्रंथालय सहायक सहकारी मंडल, रावपुर, वडोदरा, ई.स.१९३४ल पृ.३८

२. विजयराय कल्याणराय वैध, ''अर्वाचीन सार्वजनिक ग्रंथालय'', प्रकाशक : ग्रंथालय सहायक सहकारी मंडल लिमिटेड, रावपुरा, वडोदरा, प्रथम आवृत्ति, ई.स.१९३२, पृ.३९-४०

३. अमृत महोत्सव स्मृति अंक, ''श्रीमंत फतेहसिंहराव सार्वजनिक ग्रंथालय बंधारण एवम नियमो'', ई.स.१९६५, पृ.१-२

४. मूलीबेन सार्वजनिक महिला ग्रंथालय और महिला मंडल स्मृतिग्रंथ, प्रकाशक : श्रीमती चारुबेन डी.छाटकार, मंत्री महिला मंडल, पृ.६-७

५. महासुखभाइ चुनीलाल, ''विसनगर और वडोदरा राज्य की हकीकत'', प्रकाशक : धी डायमंड ज्युबिली प्रिन्टींग प्रेस, अमदावाद, ई.स.१९४२, पृ.२८०

दवे निलेषा डी.
पीएच.डी. स्कोलर, श्री गोविंद गुरु युनिवर्सिटी गोधरा.